कौओं के घोंसले और कोयल के अण्डे

माधव केलकर

चित्र: उर्वी सावंत

ठण्ड के मौसम में अक्सर देर शाम को हम लोग बाहर छोटा अलाव जलाकर बैठते हैं। इस अलाव बैठक में आसपास के बच्चे और वयस्क भी आकर बैठ जाते हैं। एक घण्टे की इसी छोटी-सी मुलाकात में भी अक्सर कई तरह के मुद्दों पर बातचीत हो जाती है।

ऐसी ही एक शाम किसी सज्जन ने कहा कि हम कौओं को चतुर कहते हैं लेकिन उन्हें कोयल मूर्ख बना देती है। मैंने उनसे कहा, "यदि आप अपनी बात को थोड़ा विस्तार से बताएँगे तो इन बच्चों को भी समझ आएगा कि आप कहना क्या चाह रहे हैं।" तब उन्होंने समझाया कि किस तरह कोयल अपने अण्डे कौओं के घोंसलों में रख देती है और कौआ उन्हें अपने अण्डे समझकर सेता रहता है। कुछ दिनों तक तो अण्डों से निकले सभी बच्चों को कौआ खाना भी खिलाता है। फिर एक दिन ऐसा आता है जब कोयल के बच्चे पर्याप्त बड़े होकर कुहू-कुहू करके वहाँ से उड़ जाते हैं और कौआ ठगा-सा रह जाता है। सभी को इस किस्से को सुनकर मज़ा आया। मुझे लगा कि यह एक मौका हो सकता है जब बच्चों से इस मुद्दे पर और बात की जा सके। मैंने वहाँ मौजूद सभी वयस्कों से

अनुरोध किया कि वे बच्चों को बोलने दें।

बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए बच्चों से मेरा पहला सवाल था कि "अंकल ने कोयल और कौओं के बारे में जो कुछ बताया, उससे तुम लोग क्या समझ पाए?"

एक बच्चे ने बताया, "कोयल अपने अण्डे कौओं के घोंसलों में रख देती है।"

दूसरे बच्चे ने कहा, "कोयल का कोई घोंसला होता है या नहीं, मालूम नहीं।"

पहले ने फिर कहा, "मैंने सुना है कि पक्षी अण्डे देने के लिए घोंसला बनाते हैं।"

तीसरे बच्चे ने कहा, "कौआ कोयल के अण्डों को क्यों नहीं पहचान पाता, यह समझ नहीं आया और अण्डे से बच्चे निकलने के बाद भी कौआ दोनों बच्चों में फर्क नहीं कर पाता, ऐसा क्यों?"

मैंने कहा, "आम तौर पर पक्षियों में अण्डा देने से पहले नर-मादा, दोनों मिलकर घोंसला बनाते हैं। घोंसलों में ही अण्डे सेने का काम करते हैं। अण्डे से निकलकर चूज़ा जब तक उड़ने लायक नहीं हो जाता तब तक वो घोंसले में ही रहता है। लेकिन कोयल के मामले में नर-मादा कोयल यह तकलीफ नहीं उठाते। वे बिना घोंसले के ही जीवन गुज़ार लेते हैं। यह एक किस्म की किसी अन्य पक्षी के घोंसले पर निर्भरता (परजीविता) है। मैंने बताया कि मेरे पास कोयल-कौओं की इस दोस्ती पर कुछ मज़ेदार जानकारी है जिसे अगले दिन देखेंगे। आज कुछ और सवालों पर बातचीत कर लेते हैं। मैंने अपने साथ के वयस्कों से कहा कि वे भी इस पूरे मुद्दे पर मन में उठ रहे सवालों को हम सबके बीच रख सकते हैं। हमारे पास बच्चों और बड़ों की ओर से खूब सारे सवाल आए जिन्हें मैंने नोट कर लिया।

कुछ सवाल

- क्या कौए और कोयल रंग-रूप-आकार में काफी मिलते-जुलते हैं?
- क्या कोयल किसी पेड़ पर बने कई घोंसलों में से कौओं का घोंसला पहचान लेती है?
- क्या दोनों के अण्डों के रंग और आकार में समानता होती है?
- क्या कोयल भेष बदलकर कौओं के घोंसलों तक जाती होगी?
- क्या नर कोयल भी अण्डे रखने में मदद करता होगा?
- कौओं के घोंसलों तक सफलता-पूर्वक पहुँचने और अण्डे घोंसले में रखने के लिए कोयल को कितना समय मिलता होगा?
- क्या कोयल आधे मिनट में अण्डे निकालकर घोंसले में रख देती होगी?

- क्या कौओं के घोंसले में पहले से उनके अण्डे रखे होते हैं, जिनके साथ कोयल के अण्डे मिल जाते हैं?
- क्या कौओं को गिनती नहीं आती होगी? (यह सुनकर सब हँसने लगे)
- अगर हमें कौए का घोंसला देखने को मिल जाए तो क्या हम कोयल और कौए के अण्डों में फर्क कर सकते हैं? (एक वयस्क ने कहा कि "कौओं के घोंसले के पास जाकर देखो तो, कौआ सिर पर चोंच से हमला करने लगता है।")
- क्या मादा कोयल और मादा कौओं का प्रजनन व अण्डे देने का समय एक ही होता होगा?
- क्या कौओं के घोंसले में रखे सभी अण्डों से एक ही दिन सब बच्चे निकलते होंगे?
- क्या मादा कोयल भी बीच-बीच में अपने चूज़ों को देखने कौओं के घोंसले तक जाती होगी?
- कोयल के अण्डों की वजह से कौओं के बच्चों की परवरिश पर भी तो असर पड़ता होगा न?
- क्या कौओं को इस मुफ्त सेवा का कोई लाभ भी मिलता है?
- कौओं की संख्या कम होती दिख रही है। आजकल कौए कम ही दिखते हैं। क्या इसका सम्बन्ध कोयल के बच्चों की परवरिश से है?
- यदि कौओं का कोई घोंसला आसपास हो ही नहीं तो कोयल अण्डे कहाँ देगी?
- यदि कौओं की संख्या कम हो जाए तो क्या कोयल की संख्या भी कम हो जाएगी?

आप देख सकते हैं कि हमारे पास विविध तरह के बहुत सारे सवाल आ गए थे। इससे पता चलता है कि कोयल-कौए की इस दोस्ती में बच्चों के अलावा वयस्कों की भी काफी दिलचस्पी थी। विविध तरह के सवाल सभी के दिमाग में चल रहे थे। शायद आज से पहले इस घटना के बारे में इतनी तफसील से कभी बातचीत नहीं की गई थी।

सभी के अपने-अपने तर्क

जब हम सवालों की ओर मुड़े तो एक वयस्क ने अपने मोबाइल पर कौए और कोयल की तस्वीर सबको दिखाई। हम सबको एहसास हुआ कि हम लोगों ने कौओं को तो फिर भी काफी ध्यान से देखा है लेकिन कोयल को इतने गौर से कभी नहीं देखा था। कौओं का पूरे साल हमारे आसपास आसानी-से दिखाई देना, हमारे आसपास आकर बैठ जाना शायद इसका प्रमुख कारण हो सकता है। कोयल की ओर हमारा ध्यान आम तौर पर तभी जाता है जब वह कुहू-कुहू की आवाज़ निकालती है। तब कोयल किसी घने दरख्त की पतली टहनियों में छिपी होती है (कुहू-कुहू

चित्र-1: *अण्डे देने के कोई एक महीने पहले कौए टहनियाँ एकत्र करना प्रारम्भ कर देते हैं। प्रत्येक टहनी सावधानीपूर्वक चुनी जाती है। मज़बूत टहनियों से घोंसले का आधार बनाया जाता है और फिर पतली व नरम टहनियाँ बिछाई जाती हैं।*

नर कोयल करती है, मादा कोयल का ध्यान खुद की ओर आकर्षित करने के लिए)। हमारे एक साथी का विचार था कि कोयल शर्मीली होती है इसलिए वह छिपी रहती है जिस वजह से हम उसे बहुत गौर से नहीं देख पाते।

हम अब अगले सवाल पर थे – क्या किसी ने कौओं का घोंसला देखा है? हम लोगों में से कुछ ने कौओं का घोंसला देखा था। आम, पीपल, बरगद, नीम आदि पर कौओं के घोंसले दिखाई दिए थे। कुछ वयस्कों का कहना था कि तार, साइकिल के स्पोक जैसी सामग्री भी इन घोंसलों में देखी गई थी।

हम में से कुछ लोगों का मानना था कि कोयल कौए के घोंसले को पहचान सकती है। इसी तरह दोनों के अण्डे रंग-रूप-आकार में लगभग एक-जैसे होते होंगे। तभी तो कौए कोयल के अण्डे पहचान नहीं पाते। कोयल और कौए का प्रजनन काल मार्च से जून होता होगा (कोयल आम के मौसम में ज़्यादा कूकती है)। इसी तरह मादा कोयल किसी घोंसले पर निगाह बनाकर रखती होगी। हो सकता है, एक-दो बार जाकर घोंसले का मुआयना भी कर लेती होगी। फिर मौका देखकर मादा कौए के अण्डों के साथ अपने अण्डे भी रख देती होगी (नर कोयल कोई मदद करता है या नहीं, इसके बारे में हमें स्पष्टता नहीं थी)। उस समय कौए घोंसले के आसपास नहीं होते होंगे। कौओं को गिनती आती है या नहीं, इसके बारे में हमारे पास कोई जानकारी नहीं थी। अण्डों से कोयल और कौओं के चूज़े एक ही समय निकलेंगे, ऐसा ज़रूरी नहीं है। थोड़ा आगे-पीछे हो ही सकता है। कोयल ने चूँकि अपने अण्डे और चूज़े कौओं के हवाले कर दिए हैं तो बीच-बीच में जाकर चूज़ों को देखने का कोई औचित्य ही नहीं है। यदि भारत में

कौओं की संख्या बहुत कम हो जाए तो कोयल किसी अन्य पक्षी के घोंसले की तलाश कर सकती है। अमरीका, अफ्रीका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया वगैरह में कोयल अन्य पक्षियों के घोंसलों में अपने अण्डे रखकर आती है जिनकी परवरिश वो पक्षी करते हैं। मतलब, कोयल का ऐसा याराना कुछ अन्य पक्षियों के साथ भी है।

हमारे कुछ सवाल अनुत्तरित थे। मैंने सबसे वायदा किया कि अगले दिन मैं कोयल और कौए की इस अनोखी दोस्ती पर एक लेख लेकर आऊँगा। उसमें हमारे काफी सारे सवालों के जवाब हैं।

अगली शाम मैं अपने साथ मित्र के.आर. शर्मा के एक लेख की कुछ फोटोकॉपी करवाकर ले गया। उसे पढ़कर सभी को सन्तोष हुआ कि उनके कुछ सवालों के जवाब इस लेख में मिल रहे हैं। कुछ लोगों के लिए जैव-विकास, परजीविता जैसे शब्द नए थे। हालाँकि, हम इन पर ज़्यादा चर्चा नहीं कर पाए।

आप सभी के साथ भी के.आर. शर्मा का लेख साझा किया जा रहा है। शायद आप भी इसे पढ़कर अपने कुछ सवालों के जवाब पा सकेंगे और अन्य सवालों के जवाब तलाशने की प्रेरणा पाएँगे।

माधव केलकर: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

कौआ और कोयल: संघर्ष या सहयोग

कालू राम शर्मा

इन दिनों भरी गर्मी में कौओं को चोंच में सूखी टहनी दबाए उड़कर पेड़ों की ओर जाते देखा जा सकता है। कौओं की चहल-पहल अप्रैल से जून के बीच कुछ अधिक दिखाई देती है। अगर आप इन दिनों पेड़ों पर नज़र डालें तो दो डालियों के बीच कुछ टहनियों का बिखरा-बिखरा-सा कौए का घोंसला देखने को मिल सकता है।

पिछले दिनों मुझे मध्यप्रदेश के कुछ ज़िलों से गुज़रने का मौका मिला तो पाया कि पेड़ों पर कौओं ने बड़ी तादाद में घोंसले बनाए हैं। दिलचस्प बात यह लगी कि कौओं ने घोंसला बनाने के लिए उन पेड़ों को चुना जिनकी पत्तियाँ झड़ चुकी थीं और नई कोपलें आने वाली थीं। जब पत्तियाँ झड़ जाएँ तो पेड़ की एक-एक शाखा दिखाई देती है। जब पत्तियाँ मौजूद होती हैं तो कई पक्षी वगैरह इसमें पनाह पाते हैं मगर वे दिखते नहीं। पीपल के पेड़ पर अधिकतम घोंसले दिखाई दिए। एक ही पीपल

चित्र-1: कौए के घोंसले। कौए आम तौर पर मार्च और अप्रैल के अन्त में घोंसले बनाना शुरू करते हैं। घोंसला ज़मीन से करीब तीन-चार मीटर की ऊँचाई पर होता है।

के पेड़ पर सात से दस घोंसले भी देखने को मिले।

दरअसल, कौए ऐसे पेड़ को घोंसला बनाने के लिए चुनते हैं जिस पर घने पत्ते न हों। एक वजह यह हो सकती है कि कौए दूर से अपने घोंसले पर नज़र रख सकें या घोंसले में बैठे-बैठे दूर-दूर तक नज़रें दौड़ा सकें। घोंसला ज़मीन से करीब तीन-चार मीटर की ऊँचाई पर होता है। नर और मादा मिलकर घोंसला बनाते हैं और दोनों मिलकर अण्डों-चूज़ों की परवरिश भी करते हैं।

कहानी का रोचक हिस्सा यह है कि कौए व कोयल का प्रजनन काल लगभग एक ही होता है। इधर कौए घोंसला बनाने के लिए सूखे तिनके वगैरह एकत्र करने लगते हैं और नर व मादा का मिलन होता है, और उधर नर कोयल की कुहू-कुहू सुनाई देने लगती है। नर कोयल अपने प्रतिद्वन्द्वियों को चेताने व मादा को लुभाने के लिए तान छेड़ता है। घोंसला बनाने की जद्दोजहद से कोयल दूर ही रहती है।

कौए का घोंसला साधारण-सा दिखाई देता है। किसी को लग सकता है कि यह तो मात्र टहनियों का ढेर है। हकीकत यह है कि यह घोंसला कई हफ्तों की मेहनत का फल होता है। अण्डे देने के कोई एक महीने पहले कौए टहनियाँ एकत्र करना प्रारम्भ कर देते हैं। प्रत्येक टहनी सावधानीपूर्वक चुनी जाती है। मज़बूत टहनियों से घोंसले का आधार बनाया जाता है और फिर पतली व नरम टहनियाँ बिछाई जाती हैं। कौए के घोंसले में धातु के तारों का इस्तेमाल भी किया जाता है। ऐसा लगता है कि बढ़ते शहरीकरण के चलते टहनियों के अलावा उन्हें तार वगैरह जो भी मिल जाए, उनका इस्तेमाल कर लेते हैं।

कोयल कौए के घोंसले में अण्डे देती है। कोयल के अण्डों-बच्चों की परवरिश कौए द्वारा होना, जैव-विकास के क्रम का नतीजा है। कोयल ने कौए के साथ ऐसी जुगलबन्दी बिठाई है कि जब कौए का अण्डे देने

का वक्त आता है तब वह भी अण्डे देती है। कौआ जिसे चतुर माना जाता है, वह कोयल के अण्डों को सेता है और उन अण्डों से निकले चूज़ों की परवरिश भी करता है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पाया है कि कोयल के पंख स्पैरो हॉक नामक पक्षी से काफी मिलते-जुलते हैं। स्पैरो हॉक जैसे पंख अन्य पक्षियों को भयभीत करने में मदद करते हैं। इसी का फायदा उठाकर कोयल कौए के घोंसले में अण्डे दे देती है। उल्लेखनीय है कि स्पैरो हॉक एक शिकारी पक्षी है जो पक्षियों व अन्य रीढ़धारी जन्तुओं का शिकार करता है। वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया जिसमें नकली कोयल और नकली स्पैरो हॉक को एक गाने वाली चिड़िया के घोंसले के पास रख दिया। देखा गया कि गाने वाली चिड़िया उन दोनों से डर गई।

परजीवी-मेज़बान का रिश्ता

तो कोयल कौए के घोंसले पर परजीवी है। कोयल माताएँ विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों के घोंसलों में अपने अण्डे देकर अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्त हो जाती हैं। कौआ माएँ कोयल के चूज़ों को अपना ही समझती हैं। आम समझ कहती है कि परजीविता में मेज़बान को ही नुकसान उठाना पड़ता है। लेकिन परजीवी पक्षियों के सम्बन्ध में हुए कई अध्ययन बताते हैं कि इस तरह के परजीवी की उपस्थिति से मेज़बान को भी फायदा होता है। तो क्या कोयल और कौए के बीच घोंसला-परजीविता का रिश्ता कौए के चूज़ों को कोई फायदा पहुँचाता है? ऐसा प्रतीत होता है कि कोयल के चूज़ों की बदौलत कौए के चूज़ों को शरीर पर आ चिपकने वाले परजीवी कीटों वगैरह से निजात मिलती है।

चित्र-2: *कौआ कोयल के अण्डों को सेता है और उन अण्डों से निकले चूज़ों की परवरिश भी करता है।*

स्पेन के शोधकर्ताओं की एक टीम ने पाया है कि कोयल की एक प्रजाति वाकई में घोंसले में पल रहे कौओं के चूज़ों को जीवित रहने में मदद करती है। टीम बताती है कि ग्रेट स्पॉटेड कुकू द्वारा कौए के घोंसले में अण्डे दिए जाने पर कौए के अण्डों से चूज़े निकलना अधिक सफलतापूर्वक होता है। अध्ययन से पता चला कि

कैरिअन कौओं के जिन घोंसलों में कोयल ने अण्डे दिए, उनमें कौए के चूज़ों के जीवित रहने की दर कोयल-चूज़ों से रहित घोंसले से अधिक थी। और करीब से देखने पर पता चला कि कोयल के चूज़ों के पास जीवित रहने की व्यवस्था थी जो कौओं के पास नहीं होती। जिन घोंसलों में कोयल के चूज़े पनाह पा रहे थे, उन पर शिकारी बिल्ली वगैरह का हमला होने पर कोयल के चूज़े दुर्गन्ध छोड़ते हैं। यह दुर्गन्ध प्रतिकारक (रिपेलेन्ट) रसायनों के कारण होती है और शिकारी बिल्ली व पक्षियों को दूर भगाने में असरकारक साबित होती है। अर्थात् पक्षियों के बीच परजीवी-मेज़बान का रिश्ता हम आम तौर पर जो समझते हैं, उससे ज़्यादा जटिल है।

ज़रूरी है कौओं का संरक्षण

अब लोग महसूस करने लगे हैं कि पिछले बीस-पच्चीस बरसों में कौओं की तादाद घटी है। अधिकतर ऐसा एहसास लोगों को श्राद्ध पक्ष में होता है जब वे कौओं को पुरखों के रूप में आमंत्रित करना चाहते हैं। घण्टों छत पर खीर-पूड़ी का लालच दिया जाता है मगर कौए नहीं आते।

कौओं को संरक्षित करने के लिए उनके प्रजनन स्थलों को सुरक्षित रखना होगा। कोयल का मीठा संगीत सुनना है तो कौओं को बचाना होगा!

जब पक्षी घोंसला बनाते हैं तो वे सुरक्षा के तमाम पहलुओं को ध्यान में रखते हैं। पिछले दिनों मैं एक शादी के जलसे में शामिल हुआ था। बारात के जलसे में डीजे से लेकर बैंड व ढोल जैसे भारी-भरकम ध्वनि उत्पन्न करने वाले साधनों की भरमार थी। मैंने पाया कि जिन कौओं ने सड़क किनारे पेड़ों पर घोंसले बनाए थे, वे इनके कानफोडू शोर की वजह से असामान्य व्यवहार कर रहे थे। कौए भयभीत होकर घोंसलों से दूर जाकर काँव...काँव... की आवाज़ निकाल रहे थे। दरअसल, पक्षियों को भी, खासकर प्रजनन काल में, शोरगुल से दिक्कत होती है। इस तरह के अवलोकन तो आम हैं कि अगर पक्षियों के घोंसलों को कोई छू ले तो फिर वे उन्हें त्याग देते हैं। फोटोग्राफर के लिए भी सलाह दी जाती है कि पक्षियों के घोंसलों के बहुत नज़दीक जाकर फोटो न खींचें क्योंकि कैमरे के फ्लैश की रोशनी पक्षियों को विचलित कर सकती है।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

यह लेख *स्रोत* पत्रिका के अंक सितम्बर, 2019 से साभार।